1 13/ Part II 400 P. III इण्डोनेशिया में बुद्धिस्ट मंदिर

Que. 3. Buddhist Temples in Indonesia

Ans ⟶ मलयेशिया और इन्डोनेसिया के क्षेत्र में जावा ही एक ऐसा द्वीप है जहाँ प्राचीन मंदिर और चैत्य इससमय भी विद्यमान है। शैलेन्द्र साम्राज्य की राजधानी श्री विजय सुमात्रा में थी और मलाया प्रायद्वीप में भी अनेक समृद्ध भारतीय राज्य प्राचीन समय में विद्यमान थे। पर वहाँ के पुराने पौराणिक व बौद्ध धर्मस्थान अब नष्ट हो चुके हैं और उनके खंडहर ही कहीं कहीं दिखाई देते हैं। पर जावा के प्राचीन मंदिर व चैत्य पर्याप्त रूप से सुरक्षित दशा में है, यद्यपि वहाँ के निवासी भी अब इस्लाम को अपना चुके हैं।

शैलेन्द्र राजा बौद्ध धर्म में अनुयायी थे। अपने साम्राज्य का विस्तार करते हुए जब उन्होंने जावा को भी अपने अधीन कर लिया तो वहाँ भी बौद्ध धर्म का प्रचार होने लगा और शैलेन्द्र ~~राज्य~~ राजाओं द्वारा वहाँ बहुत से चैत्यों तथा स्तूपों का निर्माण कराया गया। ऐसा सबसे पुराना चैत्य या मंदिर चण्डी कालसन का है जिसके 778 ई० के अभिलेख से यह सूचित होता है कि उसे एक शैलेन्द्र राजा ने देवी तारा के लिए बनवाया था। अभिलेख में कालस गाँव के बौद्ध संघ को दान में दिये जाने का उल्लेख है। इसीलिए तारा के लिए निर्मित चैत्य या मंदिर का नाम चण्डीकालसन पड़ा। जावा के मंदिरों के लिए चण्डी शब्द प्रयुक्त किया जाता था। चिरकाल तक उपेक्षित रहने और विधर्मियों के प्रकोप के कारण इस मंदिर का बहुत सा भाग अब नष्ट हो गया है। मंदिर एक चौकोर चबूतरे पर खड़ा है। जो बारह फीट तक बाहर की ओर निकला हुआ है, मंदिर का मुख्य भाग भी चौकोर है। उसके प्रधान द्वार के ऊपर विशाल कीर्तिमुख बना है जिसके मुख से पाँच कमल लटक रहे हैं। द्वार पर बहुत सी सुन्दर मूर्तियाँ अंकित हैं। द्वार के दोनों ओर, ताखों के ऊपरी भाग पर सुंदर रूपावलियाँ हैं जहाँ से छत प्रारंभ होती है, वहाँ बुद्ध की प्रतिमा मूर्तियां पंक्ति में बनी हुयी है। इनमें प्रधान ~~ध्यानी बुद्ध~~ ~~(अक्षोभ्य)~~ रत्नसम्भव, अमिताभ

और अमोघसिद्धि की मूर्तियाँ हैं।

चण्डी-कालेसन से आधा मील उत्तर में चण्डी सारी मंदिर है जो अब अत्यन्त ध्वस्त दशा में है। मूल दशा में यह एक दोमंजिली इमारत थी, जिसकी लम्बाई पृथक और चौड़ाई ३२ फीट थी। नीचे की मंजिल में मंदिर और ऊपर की मंजिल को निवास के लिए विहार के रूप में प्रयुक्त किया जाता था। दोनों मंजिलों पर तीन-तीन सिंहासन थे, जिन पर बौद्ध-मूर्तियाँ प्रतिष्ठापित की गयी मंदिर को सब ओर से विविध कलात्मक मूर्तियों द्वारा विभूषित किया गया था। जो मूर्तियाँ अब शेष बच रही हैं, वे अत्यन्त सुन्दर हैं।

प्रम्बनन की घाटी के दक्षिण पूर्व सोआयो और जिदएंग पवार के उत्तर-पश्चिम में केदू का मैदान है, जहाँ बहुत से पुराने मंदिरों के ध्वंसावशेष विद्यमान हैं। यद्यपि बहुत से मंदिर ध्वस्त दशा में हैं पर वहाँ चंडी मेन्दुत तथा चंडी पवान के मंदिर इस समय भी पर्याप्त रूप से अच्छी दशा में है। चंडी मेन्दुत का मंदिर ७० फीट लम्बे ७८ फीट चौड़े और ६६ फीट ऊँचे चबूतरे पर बना है। वह चौकोर है और १५ वर्ग वर्गगज उसका क्षेत्र है। मंदिर की दिवारों पर सुन्दर मूर्ति पंक्तियाँ हैं जिनमें मध्य की मूर्तिपंक्ति के उत्तर पूर्व पद्मासना अष्टभुजा देवी की मूर्ति है, इस देवी के दोनों ओर प्रभामंडित दो मनुष्य मूर्तियाँ हैं। जिनके एक हाथ में कमल और दूसरे में चंवर है। देवी के दायें वाले हाथों में शंख, वज्र, बिल्व तथा माला है और बायें वाले हाथों में परशु, अंकुश, पुस्तक और कोई गोल पदार्थ है। इस मूर्ति पंक्ति में के सामने की ओर पद्मासन तीन पद्मासन उत्कीर्ण किए गये हैं जिनमें बीचवाला अन्य दो से ऊँचा है। इस ऊँचे पद्मासन पर एक देवी आसीन है, जिसके दो हाथ ध्यानमुद्रा में गोद में पड़े और शेष दो में से एक में माला और दूसरे में पुस्तक है। पार्श्ववर्ती दो पद्मासनों पर दो अन्य मूर्तियाँ हैं। मेन्दुत के इस मंदिर में बुद्ध और बोधिसत्वों की मूर्ति

सी मूर्तियां हैं। इनमें एक पत्थर से बनी दस फीट ऊँची बुद्ध की मूर्ति है जिसके पादपीठ में एक चक्र के दोनों ओर दो मृग बने हैं इस मूर्ति में बुद्ध को धर्म-चक्र प्रवर्तन करते हुए दिखाया गया है बुद्ध की मूर्तियाँ साधारण चीवर में बिना किसी सजावट के हैं पर अवलोकितेश्वर और मंजुश्री की मूर्तियों को वस्त्राभूषणों से अलंकृत रूप से बनाया गया है। चंडी मेन्दुत की ये तीन मूर्तियाँ दक्षिण-पूर्वी एशिया की मूर्तिकला की सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हैं। मेन्दुत मंदिर के चारों ओर एक विशाल आँगन है जो ३६० फीट लम्बा और १६५ फीट चौड़ा है।

चंडी मेन्दुत से १५५८ गज दूर चंडीपवान का मंदिर है। यह एक चोटी पर अत्यन्त सुन्दर मंदिर है। इसका बहुत सा भाग ध्वस्त हो चुका है।

मेन्दुत और पवान के मंदिरों को मिलाने वाली रेखा को यदि सीधे १७१३ गज और आगे बढ़ाया जाय तो बरोबुदुर का महाचैत्य आ जाता है। यह एक पहाड़ी की चोटी पर बना है। प्राकृतिक सौन्दर्य की दृष्टि से यह स्थान जितना मनोरम है, वास्तुकला ने उससे भी बढ़कर अपना चमत्कार यहाँ प्रदर्शित किया है। यह महाचैत्य नौ चबूतरों या चक्करों से मिलकर बना है। जिनमें से प्रत्येक के ऊपर का चक्कर अपने से नीचे वाले चक्कर की तुलना में थोड़ी भीतर की ओर सिमटा हुआ है। सबसे ऊपरले चक्कर के ऊपर घण्टाकार चैत्य है। नौ चक्करों या चबूतरों में सबसे निचले छह सीधी रेखा के कोणों वाले हैं वे गोलाकार न होकर समकोण चतुर्भुजों के रूप में हैं। ऊपर के तीन चक्कर गोलाकार हैं सबसे निचले चक्कर की लम्बाई ४०० फीट है और सबसे ऊपर वाले की ७० फीट। सबसे ऊपर के तीन ~~चक्करें~~ चक्कर स्तूपों से घिरे हुए हैं और इन स्तूपों में घंटेवाली छत के नीचे बुद्ध की एक-एक मूर्ति बनी हुयी है।

महाचैत्य के विविध चक्करों या चबूतरों की दीवारों पर रूपावलियां अंकित हैं और उनके बीच-बीच में गवाक्ष बने हैं, जिनमें ~~में~~ से प्रत्येक में एक

बुद्धों की एक एक मूर्ति प्रतिष्ठापित है। और महाचैत्य में ऐसे 432 मूर्तियाँ हैं। नीचे के पाँच चक्करों के भीतर की ओर बनायी गई बाढ़ के कारण जो गलियारे बन गये हैं वे प्रायः साढ़े छः फीट चौड़े और आठ फीट से साढ़े बारह फीट तक ऊँचे हैं। इनमें बनी रथपालियों में बुद्ध की जीवनी को प्रस्तरों पर उत्कीर्ण किया गया है। इस प्रकार जो चित्र इस महाचैत्य में अंकित हैं उन्हें यदि एक साथ लगा दिया जाय तो उनकी लम्बाई साढ़े तीन मील तक हो जायेगी। गलियारों के दोनों पार्श्वों में ऊपर के चक्कर में जाने के लिए सीढ़ियाँ बनायी गयी हैं जिनके ऊपर मेहराब बने हैं। मेहराबों के बीच में कीर्तिमुख हैं जिनसे फूल लटक रहे हैं।

बरोबदुर के इस महाचैत्य के काल के सम्बन्ध में विद्वानों को यह मत अभिप्रेत है कि इस का निर्माण 750 से 850 ई० के बीच में हुआ था। इस समय में जावा पर प्रतापी शैलेन्द्र सम्राटों का शासन था, और उन्हीं के संरक्षण में इस महाचैत्य का निर्माण हुआ था। दक्षिण-पूर्वी एशिया के प्राचीन अवशेषों में यह सबसे महत्वपूर्ण एवं विशाल है और इसे संसार के आश्चर्यों में गिना जाता है।